



Mr. Ghanshyam

30 Jan 2026

09:51 PM

Ghaziabad

Model: Web-MyKundli

Order No: 121334001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 30/01/2026
दिन _____: शुक्रवार
जन्म समय _____: 21:51:00 घंटे
इष्ट _____: 36:42:56 घटी
स्थान _____: Ghaziabad
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:40:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:26:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:20:16 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 21:30:44 घंटे
वेलान्तर _____: -00:13:15 घंटे
साम्पातिक काल _____: 06:10:24 घंटे
सूर्योदय _____: 07:09:49 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:57:36 घंटे
दिनमान _____: 10:47:47 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 16:33:47 मकर
लग्न के अंश _____: 08:04:06 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: मिथुन - बुध
नक्षत्र-चरण _____: आर्द्रा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: तैतिल
गण _____: मनुष्य
योनि _____: श्वान
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: ड--
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कुम्भ

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	माघ	10
पंजाबी	संवत : 2082	माघ	17
बंगाली	सन् : 1432	माघ	16
तमिल	संवत : 2082	थई	17
केरल	कोल्लम : 1201	मकरम	16
नेपाली	संवत : 2082	माघ	17
चैत्रादि	संवत : 2082	माघ	शुक्ल 12
कार्तिकादि	संवत : 2082	माघ	शुक्ल 12

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 12
तिथि समाप्ति काल _____ : 11:09:23
जन्म तिथि _____ : 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : आर्द्रा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 27:27:18 घंटे
जन्म योग _____ : आर्द्रा
सूर्योदय कालीन योग _____ : वैधृति
योग समाप्ति काल _____ : 16:58:23 घंटे
जन्म योग _____ : विष्कुम्भ
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 11:09:23 घंटे
जन्म करण _____ : तैतिल
भयात _____ : 40:54:18
भभोग _____ : 54:55:03
भोग्य दशा काल _____ : राहु 4 वर्ष 7 मा 1 दि

घात चक्र

मास _____ : आषाढ़
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : सोमवार
नक्षत्र _____ : स्वाति
योग _____ : परिघ
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : मूषक
लग्न _____ : कर्क
सूर्य _____ : मीन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : मेष
बुध _____ : मकर
गुरु _____ : वृष
शुक्र _____ : मिथुन
शनि _____ : कुम्भ
राहु _____ : कर्क

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

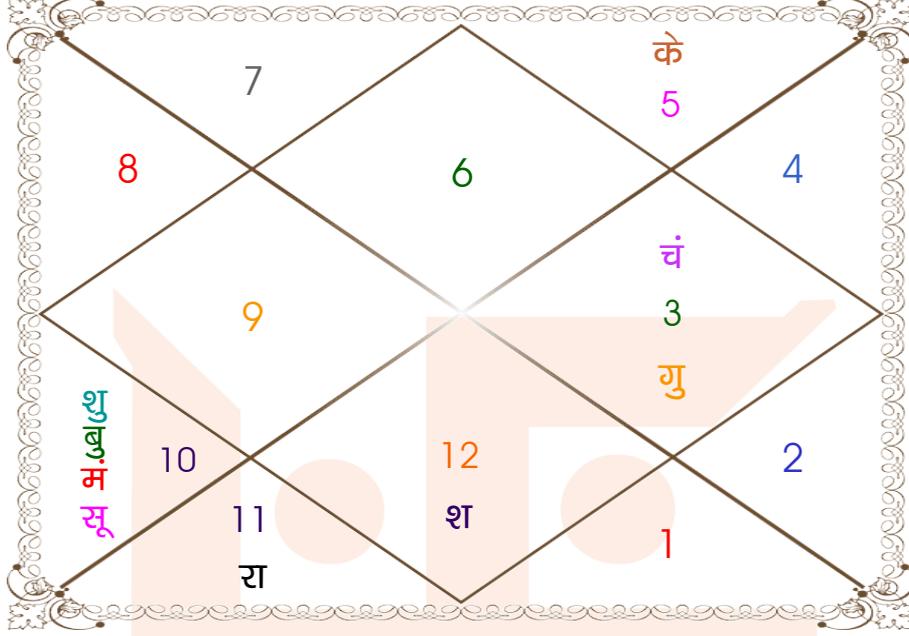
Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

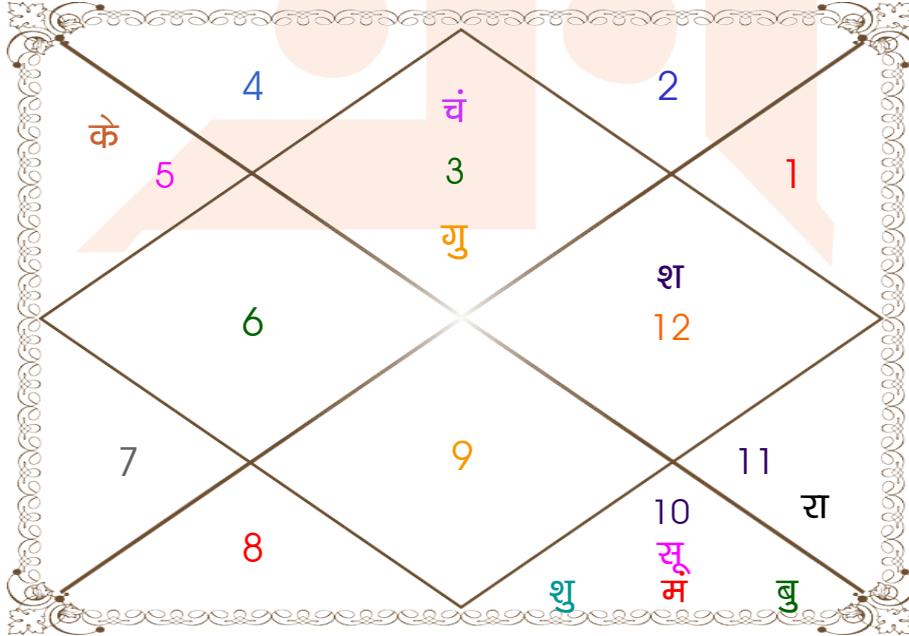
ptsumanjha@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

श		चं गु
रा		के
शु म सू बु		ल

लग्न कुंडली

गु चं	श	रा
के	मं शु	सू बु
ल		

विंशोत्तरी
राहु 4वर्ष 7मा 1दि
राहु

30/01/2026

02/09/2132

राहु	02/09/2030
गुरु	02/09/2046
शनि	01/09/2065
बुध	02/09/2082
केतु	01/09/2089
शुक्र	02/09/2109
सूर्य	03/09/2115
चन्द्र	02/09/2125
मंगल	02/09/2132

योगिनी

मंगला 0वर्ष 3मा 1दि
मंगला

30/01/2026

03/05/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	30/01/2026
सिद्धा	11/02/2026
संकटा	03/05/2026

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

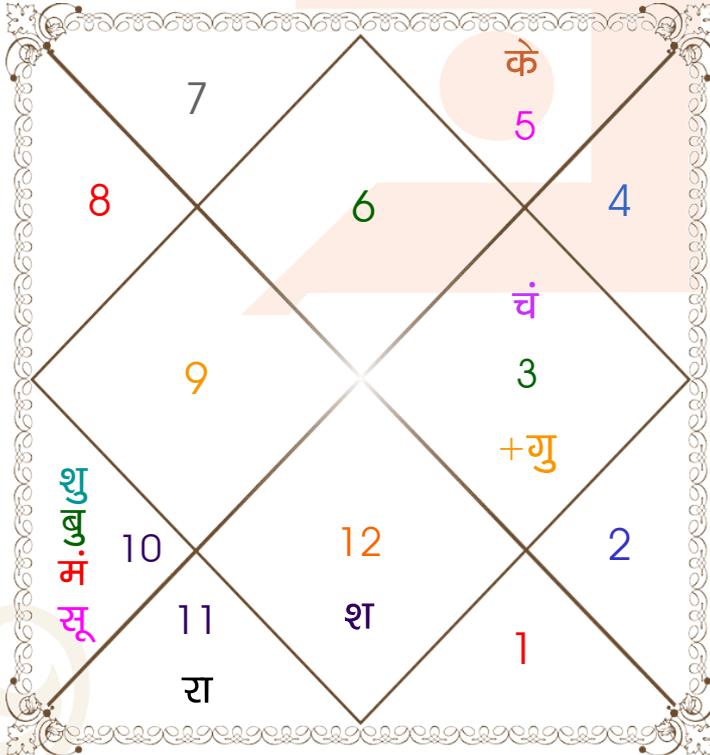
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	08:04:06	318:00:49	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	---
सूर्य			मक	16:33:47	01:00:54	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	शनि	शत्रु राशि
चंद्र			मिथु	16:36:10	14:33:24	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	शुक्र	मित्र राशि
मंगल	अ		मक	11:28:22	00:46:56	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	मंगल	उच्च राशि
बुध	अ		मक	22:55:32	01:45:33	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	सूर्य	सम राशि
गुरु	व		मिथु	23:17:09	00:06:51	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र	अ		मक	22:17:58	01:15:18	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि
शनि			मीन	04:17:18	00:05:50	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
राहु	व		कुंभ	14:59:10	00:04:20	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	14:59:10	00:04:20	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	03:14:41	00:00:14	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	शनि	---
नेप			मीन	05:52:49	00:01:37	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो			मक	09:25:54	00:01:55	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
दशम भाव			मिथु	08:09:49	--	आर्द्रा	--	6	बुध	राहु	राहु	--

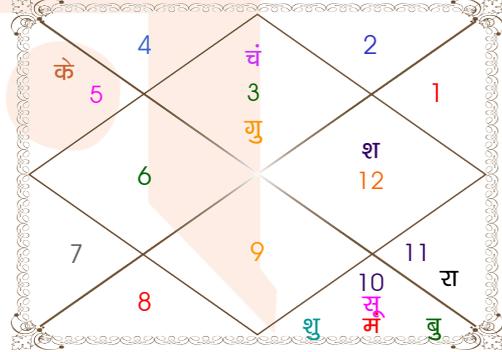
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:24

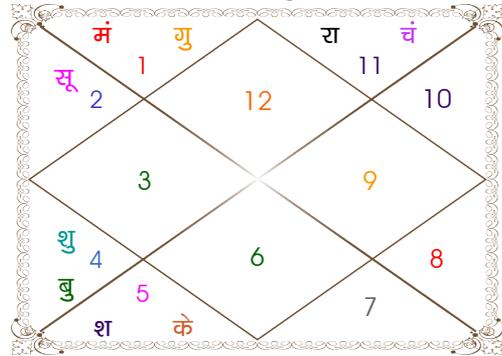
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 23:05:03	कन्या 08:04:06
2	कन्या 23:05:03	तुला 08:06:00
3	तुला 23:06:57	वृश्चिक 08:07:55
4	वृश्चिक 23:08:52	धनु 08:09:49
5	धनु 23:08:52	मकर 08:07:55
6	मकर 23:06:57	कुम्भ 08:06:00
7	कुम्भ 23:05:03	मीन 08:04:06
8	मीन 23:05:03	मेष 08:06:00
9	मेष 23:06:57	वृष 08:07:55
10	वृष 23:08:52	मिथुन 08:09:49
11	मिथुन 23:08:52	कर्क 08:07:55
12	कर्क 23:06:57	सिंह 08:06:00

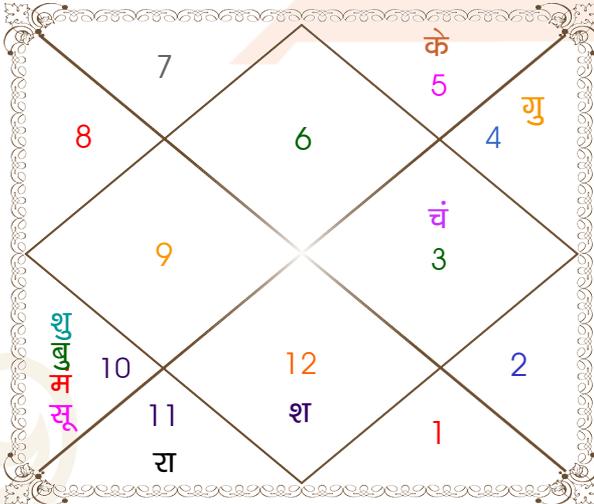
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	08:04:06
2	तुला	06:11:01
3	वृश्चिक	06:37:40
4	धनु	08:09:49
5	मकर	09:43:46
6	कुम्भ	10:09:29
7	मीन	08:04:06
8	मेष	06:11:01
9	वृष	06:37:40
10	मिथुन	08:09:49
11	कर्क	09:43:46
12	सिंह	10:09:29

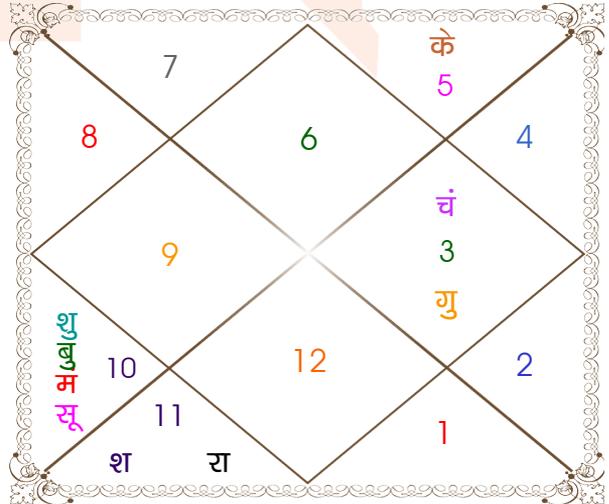
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 4 वर्ष 7 मास 1 दिन

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
30/01/2026	02/09/2030	02/09/2046	01/09/2065	02/09/2082
02/09/2030	02/09/2046	01/09/2065	02/09/2082	01/09/2089
00/00/0000	गुरु 20/10/2032	शनि 04/09/2049	बुध 29/01/2068	केतु 29/01/2083
00/00/0000	शनि 03/05/2035	बुध 14/05/2052	केतु 25/01/2069	शुक्र 30/03/2084
00/00/0000	बुध 08/08/2037	केतु 23/06/2053	शुक्र 26/11/2071	सूर्य 05/08/2084
00/00/0000	केतु 15/07/2038	शुक्र 23/08/2056	सूर्य 01/10/2072	चंद्र 06/03/2085
30/01/2026	शुक्र 15/03/2041	सूर्य 05/08/2057	चंद्र 03/03/2074	मंगल 02/08/2085
शुक्र 21/03/2027	सूर्य 01/01/2042	चंद्र 06/03/2059	मंगल 28/02/2075	राहु 20/08/2086
सूर्य 13/02/2028	चंद्र 03/05/2043	मंगल 14/04/2060	राहु 17/09/2077	गुरु 27/07/2087
चंद्र 14/08/2029	मंगल 08/04/2044	राहु 19/02/2063	गुरु 23/12/2079	शनि 04/09/2088
मंगल 02/09/2030	राहु 02/09/2046	गुरु 01/09/2065	शनि 02/09/2082	बुध 01/09/2089

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
01/09/2089	02/09/2109	03/09/2115	02/09/2125	02/09/2132
02/09/2109	03/09/2115	02/09/2125	02/09/2132	00/00/0000
शुक्र 01/01/2093	सूर्य 21/12/2109	चंद्र 03/07/2116	मंगल 29/01/2126	राहु 16/05/2135
सूर्य 01/01/2094	चंद्र 21/06/2110	मंगल 01/02/2117	राहु 17/02/2127	गुरु 09/10/2137
चंद्र 02/09/2095	मंगल 27/10/2110	राहु 03/08/2118	गुरु 24/01/2128	शनि 15/08/2140
मंगल 01/11/2096	राहु 21/09/2111	गुरु 03/12/2119	शनि 04/03/2129	बुध 04/03/2143
राहु 02/11/2099	गुरु 09/07/2112	शनि 03/07/2121	बुध 01/03/2130	केतु 22/03/2144
गुरु 04/07/2102	शनि 21/06/2113	बुध 03/12/2122	केतु 28/07/2130	शुक्र 31/01/2146
शनि 02/09/2105	बुध 28/04/2114	केतु 04/07/2123	शुक्र 27/09/2131	00/00/0000
बुध 03/07/2108	केतु 03/09/2114	शुक्र 04/03/2125	सूर्य 02/02/2132	00/00/0000
केतु 02/09/2109	शुक्र 03/09/2115	सूर्य 02/09/2125	चंद्र 02/09/2132	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 4 वर्ष 7 मा 3 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र	राहु - मंगल	गुरु - गुरु
30/01/2026	21/03/2027	13/02/2028	14/08/2029	02/09/2030
21/03/2027	13/02/2028	14/08/2029	02/09/2030	20/10/2032
00/00/0000	सूर्य 07/04/2027	चंद्र 30/03/2028	मंगल 05/09/2029	गुरु 14/12/2030
00/00/0000	चंद्र 04/05/2027	मंगल 01/05/2028	राहु 02/11/2029	शनि 17/04/2031
00/00/0000	मंगल 23/05/2027	राहु 22/07/2028	गुरु 23/12/2029	बुध 05/08/2031
00/00/0000	राहु 12/07/2027	गुरु 03/10/2028	शनि 22/02/2030	केतु 20/09/2031
30/01/2026	गुरु 25/08/2027	शनि 29/12/2028	बुध 17/04/2030	शुक्र 28/01/2032
गुरु 22/02/2026	शनि 16/10/2027	बुध 16/03/2029	केतु 09/05/2030	सूर्य 06/03/2032
शनि 14/08/2026	बुध 01/12/2027	केतु 17/04/2029	शुक्र 12/07/2030	चंद्र 10/05/2032
बुध 17/01/2027	केतु 20/12/2027	शुक्र 18/07/2029	सूर्य 01/08/2030	मंगल 25/06/2032
केतु 21/03/2027	शुक्र 13/02/2028	सूर्य 14/08/2029	चंद्र 02/09/2030	राहु 20/10/2032
गुरु - शनि	गुरु - बुध	गुरु - केतु	गुरु - शुक्र	गुरु - सूर्य
20/10/2032	03/05/2035	08/08/2037	15/07/2038	15/03/2041
03/05/2035	08/08/2037	15/07/2038	15/03/2041	01/01/2042
शनि 15/03/2033	बुध 28/08/2035	केतु 28/08/2037	शुक्र 24/12/2038	सूर्य 29/03/2041
बुध 24/07/2033	केतु 16/10/2035	शुक्र 24/10/2037	सूर्य 11/02/2039	चंद्र 23/04/2041
केतु 16/09/2033	शुक्र 02/03/2036	सूर्य 10/11/2037	चंद्र 03/05/2039	मंगल 10/05/2041
शुक्र 18/02/2034	सूर्य 12/04/2036	चंद्र 08/12/2037	मंगल 29/06/2039	राहु 23/06/2041
सूर्य 05/04/2034	चंद्र 20/06/2036	मंगल 28/12/2037	राहु 22/11/2039	गुरु 01/08/2041
चंद्र 21/06/2034	मंगल 07/08/2036	राहु 17/02/2038	गुरु 31/03/2040	शनि 16/09/2041
मंगल 14/08/2034	राहु 09/12/2036	गुरु 04/04/2038	शनि 01/09/2040	बुध 27/10/2041
राहु 31/12/2034	गुरु 30/03/2037	शनि 28/05/2038	बुध 17/01/2041	केतु 13/11/2041
गुरु 03/05/2035	शनि 08/08/2037	बुध 15/07/2038	केतु 15/03/2041	शुक्र 01/01/2042
गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - राहु	शनि - शनि	शनि - बुध
01/01/2042	03/05/2043	08/04/2044	02/09/2046	04/09/2049
03/05/2043	08/04/2044	02/09/2046	04/09/2049	14/05/2052
चंद्र 11/02/2042	मंगल 23/05/2043	राहु 17/08/2044	शनि 23/02/2047	बुध 22/01/2050
मंगल 11/03/2042	राहु 13/07/2043	गुरु 12/12/2044	बुध 28/07/2047	केतु 20/03/2050
राहु 23/05/2042	गुरु 28/08/2043	शनि 30/04/2045	केतु 30/09/2047	शुक्र 31/08/2050
गुरु 27/07/2042	शनि 20/10/2043	बुध 01/09/2045	शुक्र 31/03/2048	सूर्य 19/10/2050
शनि 12/10/2042	बुध 08/12/2043	केतु 22/10/2045	सूर्य 25/05/2048	चंद्र 09/01/2051
बुध 20/12/2042	केतु 28/12/2043	शुक्र 18/03/2046	चंद्र 25/08/2048	मंगल 07/03/2051
केतु 18/01/2043	शुक्र 22/02/2044	सूर्य 30/04/2046	मंगल 28/10/2048	राहु 02/08/2051
शुक्र 09/04/2043	सूर्य 11/03/2044	चंद्र 12/07/2046	राहु 11/04/2049	गुरु 11/12/2051
सूर्य 03/05/2043	चंद्र 08/04/2044	मंगल 02/09/2046	गुरु 04/09/2049	शनि 14/05/2052

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	5
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

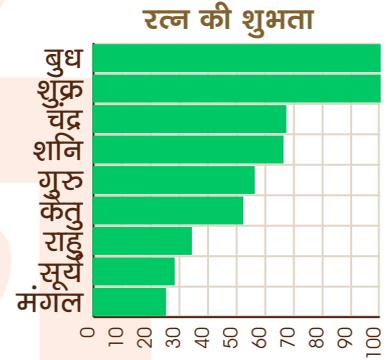
ptsumanjha@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	100%	सन्तति सुख, भाग्योदय, धन
मोती	चंद्र	67%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
नीलम	शनि	66%	दम्पति, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
पुखराज	गुरु	56%	व्यावसायिक उन्नति, सुख, दम्पति
लहसुनिया	केतु	52%	कम खर्च, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	34%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	28%	सन्तति कष्ट, व्यय
मूंगा	मंगल	25%	सन्तति कष्ट, दुर्घटना, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	02/09/2030	3%	55%	0%	100%	56%	100%	72%	55%	28%
गुरु	02/09/2046	41%	73%	38%	100%	69%	89%	66%	34%	52%
शनि	01/09/2065	3%	55%	0%	100%	56%	100%	78%	47%	28%
बुध	02/09/2082	41%	55%	25%	100%	56%	100%	66%	34%	52%
केतु	01/09/2089	3%	55%	38%	100%	56%	100%	53%	9%	64%
शुक्र	02/09/2109	3%	55%	25%	100%	56%	100%	72%	47%	58%
सूर्य	03/09/2115	52%	73%	38%	100%	62%	89%	53%	9%	28%
चंद्र	02/09/2125	41%	80%	25%	100%	56%	100%	66%	9%	28%
मंगल	02/09/2132	41%	73%	50%	100%	62%	100%	66%	9%	58%

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2108-29/07/2108	23/11/2108-17/02/2111	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसाय
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	अल्प बचत
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	स्वास्थ्य
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति सुख

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगे। पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकती हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगे। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।



Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं । यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं । त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है । अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है ।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है । इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है । यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं ।

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराकमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुःशील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्यरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराकामी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ढग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ढगने वाला होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(30/01/2026 - 02/09/2030)

राहु की महादशा 30/01/2026 को आरम्भ और 02/09/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु षष्ठम भावम में स्थित है। राहु की दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगलदशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको मामूली स्वास्थ्य-समस्या, छोटी यात्रा तथा अचानक परिवर्तन ओर छोटे भाई-बहनों से लाभ मिला होगा। राहु की इस दशा में आपको विरोधियों पर विजय, नौकरी में लाभ और स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्याएं होंगी।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किन्तु किसी अन्तर्दशा में स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्या हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप वातरोग, संक्रामक रोग, चर्मरोग, रक्त की समस्या, स्नायविक दुर्बलता आदि से ग्रसित हो सकते हैं। आप जीवन में सन्तुलन अपनाकर उत्तम स्वास्थ्य का आनन्द लेंगे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपको शत्रु और विरोधियों पर विजय और उनसे लाभ मिलेगा। सट्टे में भी लाभ हो सकता है। निवेश लाभदायक सिद्ध होगा। अदालती मामले मुकदमे में फैसला आपके हक में होगा। बारहवें भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप कुछ व्यय होगा। इसलिए उचित आर्थिक प्रबन्धन की आवश्यकता है। जीविका और व्यवसाय के लिए विज्ञान, विमान-उड्डयन, कम्प्यूटर-प्रोग्रामिंग, दवा, यातायात, ज्योतिष, रेडियोग्राफी आदि का चयन कर सकते हैं। रसायन, इग्स, एण्टीबायोटिक्स, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को लाभ, शत्रुओं पर विजय, सम्मान तथा सहयोगियों और वरिष्ठ कर्मचारियों का सद्भाव मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के लाभ में वृद्धि और व्यापार का विस्तार होगा। आपके व्यवसाय और जीवन-वृत्ति में अच्छी प्रगति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आप अपने आवास में परिवर्तन कर सकते हैं। आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप जमीन-जायदाद की खरीद-बिक्री करेंगे। इस दशा के दौरान और खासकर मंगल की अन्तर्दशा के दौरान अक्सर छोटी यात्राएं होंगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान दूर की यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। आप को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। विज्ञान, दवा, विमान इंजीनियरिंग और सभी

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

बौद्धिक-कार्यो में आपकी रुचि होगी। राहु शनि की राशि में स्थित है, इसलिए आप गम्भीर विषयों के अध्ययन में रुचि लेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को लाभ तथा कुछ परिवर्तन होगा। उन्हें आपकी सहायता व मार्गदर्शन की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी की अवांछित यात्रा, व्यय तथा कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। परिवार के साथ मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको व्यवहार-कौशल तथा धैर्य से काम लेना होगा। आपकी माता की छोटी यात्रा होगी, संबंधियों से सहायता तथा सुख की प्राप्ति तथा स्वास्थ्य उत्तम होगा जबकि आपके पिता का तीर्थाटन होगा और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि, सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा जीविका में उन्नति होगी जबकि बड़े भाई-बहनों का कुछ परिवर्तन, अचानक लाभ तथा अप्रत्याशित विकास होगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपकी विरोधियों पर विजय और मामूली स्वास्थ्य-समस्या होगी। गुरु की अन्तर्दशा में जमीन-जायदाद में वृद्धि, व्यापार में लाभ तथा शादी होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान उत्तम शिक्षा तथा बच्चों से सुख मिलेगा किन्तु, कुछ बाधा आ सकती है। बुध की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सफलता ओर सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, सम्पत्ति तथा समृद्धि होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में व्यय तथा दूर की यात्रा होगी। चन्द्र के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ मिलेगा जबकि मंगल अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा, स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या ओर परिवर्तन होगा।

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

**अंतर्दशा :- राहु - शुक्र
(30/01/2026 - 21/03/2027)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/01/2026 को प्रारंभ होकर 02/09/2030 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 30/01/2026 को प्रारंभ होकर 21/03/2027 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप रोमांटिक हो सकते हैं। राजनीति में दिलचस्पी हो सकती है। लोकप्रियता बढ़ेगी, पर्याप्त मित्र होंगे। योग्यता के बल पर धन कमाएंगे। सट्टेबाजी में भी लाभ हो सकता है। सरकार से पुरस्कार मिल सकता है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 60,000 (साठ हजार) जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - सूर्य
(21/03/2027 - 13/02/2028)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/01/2026 को प्रारंभ होकर 02/09/2030 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 21/03/2027 को प्रारंभ होकर 13/02/2028 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घर से दूर जाकर रह सकते हैं। जंगल आदि में निवास हो सकता है। अप्रसन्न हो सकते हैं। हृदय रोग हो सकता है। सावधान रहना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- दूध और शहद का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- आटा, गुड़ और तांबे के सिक्के दान करें।
- बहते पानी (नदी आदि) में तांबे के सिक्के डालें।

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com



Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

**महादशा :- गुरु
(02/09/2030 - 02/09/2046)**

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 02/09/2030 को आरम्भ और 02/09/2046 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु दशम भाव में स्थित है तथा दशम भाव सम्मान, नाम और यश आचरण पद और प्रतिष्ठा, लक्ष्य और अधिकार, कर्तव्य, उन्नति, धार्मिक उत्सव, उच्च पद, धर्म स्थलों की यात्रा, राज सम्मान, और वस्तुओं का द्योतक है।

गुरु स्वभावतः

एक शुभ ग्रह है तथा द्वितीय, चतुर्थ तथा दशम भावों को देख रहा है और इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए आनन्द और समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु दशम भाव में स्थित है तथा द्वितीय भाव और चतुर्थ भाव के अतिरिक्त षष्ठ भाव (शत्रु तथा रोग भाव) को देख रहा है जिसके फलस्वरूप आपके साथ तो कोई रोग या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु दशम भाव में स्थित है और प्रतिष्ठा और सम्मान के भाव को बली कर रहा है। दशम भाव से, जो एक केंद्र है, इसकी दृष्टि द्वितीय अर्थात् धनभाव पर (चतुर्थ तथा षष्ठ भाव के अतिरिक्त) है जिसके फलस्वरूप आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का पूर्ण अवसर इस दशा काल में मिलेगा। आप भोग-विलास की वस्तुएं खरीदेंगे।

व्यवसाय :

गुरु दशम भाव में स्थित है और उसको बली कर रहा है। आप, जो कुछ शुरू करेंगे, उसमें सफल होंगे।

आपको नाम और यश की प्राप्ति होगी। नौकरी में पदोन्नति होगी और आपको आदर और सम्मान मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

एक केन्द्र दशम भाव से गुरु की दृष्टि दूसरे केन्द्र चतुर्थ भाव अर्थात् सुख-स्थान पर है जिसके फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सुखी तथा उत्साहपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी भी आपका पूर्ण सहयोग करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आप ज्ञान की खोज को जारी रखेंगे और आपकी रुचि साहित्य और पुराणों के अध्ययन की ओर होगी।

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com

**अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(02/09/2030 - 20/10/2032)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 02/09/2030 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 02/09/2030 को प्रारंभ होकर 20/10/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपका सम्मान बढ़ेगा। प्रोन्नति, सफलता, धनी होने का योग है। सुख के साधन और वाहन आदि उपलब्ध रहेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। भूमि आदि से आय में वृद्धि होगी। निवास में परिवर्तन के लिए समय उपयुक्त है। उत्तम वस्त्र और भोजन उपलब्ध होंगे। अच्छी नौकरी मिल सकती है। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता को कई माध्यमों से धनलाभ होगा। माता की यात्राएं होंगी; घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए अप्रत्याशित धनलाभ, यात्रा और अध्यात्म में रुचि का संकेत है।

आपकी संतान स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो रोजगार के सुअवसर मिलेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, साख बढ़ेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता सफल और धनी बनेंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं बृहस्पतये नमः

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman

Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India

+919837310158

ptsumanjha@gmail.com